NAME:- RISHI KESH SINGH

SUPERVISOR:- PROF. M.P. SHARMA

TOPIC:- GHAREEBI OR AKAAL KE SANDARBH ME HINDI REPORTAZ SAHITYA KA ADHYAN

DEPARTMENT:- HINDI

VIVA VOICE DATE:- 27/08/2021

संक्षिप्त शोध सार

हिंदी गद्य साहित्य की विधाओं में रिपोर्ताज अपेक्षाकृत नवीन विधा है। नब्बे के दशक से ही इस क्षेत्र में विविध आयामों को केंद्र में रखकर निरंतर शोध कार्य किए जा रहे हैं। तत्व निर्धारण, स्वरूप विश्लेषण, विधागत विकास के अंतर्गत अनुभूति एवं अभिव्यक्ति पक्ष को लेकर कई मौलिक स्थापनाएं भी स्थापित की गई हैं। इसी क्रम में तात्विक विवेचन के अंतर्गत घटनाकलन, यथातथ्यता जैसे तत्वों के साथ-साथ रिपोर्ताज में निहित संघर्ष, प्रतिरोध, जिजीविषा, जीवटता जैसी प्रवृत्ति के कारण 'नवजीवन की आशा' नामक विधायी तत्व को भी स्थान दिया जा सकता है। इसी प्रकार शोध कार्यों के अंतर्गत हिंदी की प्रमुख गद्य विधाओं के 'उद्भव एवं विकास' खंड के लेखन को सरल एवं स्पष्ट बनाने हेतु जिस प्रकार काल विभाजन एवं नामकरण की प्रचलित पद्धति को अपनाया जाता है वैसे ही रिपोर्ताज सहित अन्य

गद्य विधाओं में सुसम्बद्ध इतिहास लेखन के अंतर्गत एक सुनिश्चित काल विभाजन एवं नामकरण की प्रणाली को अपनाने पर बल दिया जाना चाहिए।

गरीबी और अकाल से संबंधित हिंदी रिपोर्ताज प्रायः घटना या विभीषिका आधारित होते हैं। इनमें निहित गरीबी की संकल्पना केवल आय की कमी पर केंद्रित नहीं है बल्कि इसका सीधा संबंध क्षमताओं की वंचना से है। इसी कारण गरीबी या निर्धनता जहां एक तरफ कल्याणकारी अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र के अंतर्गत आने वाला विषय है वहीं जब इसका वर्णन या चित्रण साहित्य के अंतर्गत किया जाता है तब इसका स्वरूप अन्य दोनों क्षेत्रों से भी व्यापक हो जाता है क्योंकि साहित्य में वर्णित गरीबी तथ्य एवं विचार के साथ-साथ मानवीय संवेदना को भी स्वयं में समाहित करती है। परम अभाव या निरपेक्ष गरीबी का सबसे निम्नतम बिंदु अकाल है। इस अवस्था में अन्न संकट, बेरोजगारी, सामाजिक सुरक्षा तंत्र की विफलता आदि तत्व एक साथ कार्य करते हैं और समाज अंततः भुखमरी की ऐसी दशा में पहुंच जाता है जहां बड़े पैमाने पर मृत्यु होने लगती है। अस्तित्व संकट के इस दौर में सभी मानवीय संबंध एवं सामाजिक व्यवहार उल्टी धुरी पर घूमने लगते हैं।

स्वतंत्रता पूर्व एवं उसके बाद गरीबी और अकाल पर लिखे गए रिपोर्ताजों में प्रकृतिगत स्तर पर सर्वाधिक साम्यता सामाजिक प्रभावों के रूप में है। दोनों ही प्रकार के रिपोर्ताजों में स्त्री-पुरुष संबंधों में विघटन, पलायन की समस्या, महामारियों की व्याप्ति आदि संकट देखने को मिलते हैं। वहीं आर्थिक स्तर पर जहां दोनों प्रकार के रिपोर्ताजों में आय अर्जक परिसंपत्तियों के विक्रय की समस्या है तो

वहीं सामाजिक सुरक्षा तंत्र के स्तर पर दोनों में कुछ अंतर भी है। इसे राजनैतिक स्तर पर साम्राज्यवादी एवं लोकतांत्रिक सरकार की क्रियान्वित नीतिगत भेद के रूप में भी समझा जा सकता है। जिसके अंतर्गत एक सरकार (औपनिवेशिक) स्वहित हेतु शोषण की मानसिकता से प्रेरित होकर नीतियों का निर्धारण करती है तो वहीं दूसरी सरकार (लोकतांत्रिक) जनहित भाव के प्रदर्शन में संसाधनाभाव के कारण विभिन्न नीतियों का विफल नियमन ही करती है और इसी कारण गरीबी और अकाल जैसी विभीषिका निरंतर रिपोर्ताज लेखन को मजबूर करती है।